International Journal of Arts, Humanities and Social Studies
www.socialstudiesjournal.com
Online ISSN: 2664-8660, Print ISSN: 2664-8652
Received: 05-02-2022, Accepted: 20-02-2022, Published: 08-03-2022
Volume 4, Issue 1, 2022, Page No. 12-15

हिमालय रियायती प्रजामण्डल में धामी जनक्रांति का योगदान

चन्द्र वर्मा
सहायक आचार्य इतिहास, राजकीय महाविद्यालय धामी, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

सारांश
हिमालय रिसायती प्रजामण्डल में जन क्रांति लाने के लिए धामी प्रेम प्रचारिणी सभा का हिमालय रिसायती प्रजामण्डल में जन जागरण में सहयोग लाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। धामी जन क्रांति पहाड़ों में चल रहे जन जागरण आंदोलनों का ही परिणाम था। यह क्रांति धामी रियासत में चल रही दमनकारी नीतियों के विरुद्ध एक जनाक्रोश था। इस क्रांति की शुरूआत करने के लिए पहाड़ों में सर्वप्रथम आम जनता ने भाग लिया। इसका मुख्य प्रयोजन बेगार तथा समाप्ति, भूमि लगान में पच्चास फीसदी कमी, धमी राज्य प्रजामंडल को मान्यता, नागरिक अधिकारों की स्वतंत्रता, राज्य की जनता पर लगाए गये प्रतिबंध और अवरोधों की समाप्ति व प्रेम प्रचारिणी सभा के सदस्यों की जब्त की गई संपति की वापसी इत्यादि। यदि रियासत के राणा द्वारा समय रहते हमारी मागों पर त्वरित और उचित कार्रवाई नहीं की गई तो शीघ्र ही एक शिष्टमण्डल राणा से मिलेगा और उसके बावजूद भी राणा ने कोई कदम नहीं उठाया तो इसके तुरंत पश्चात धामी प्रजामण्डल राणा के विरुद्ध जनक्रांति करेगा। अतः 16 जुलाई 1939 को धामी के लिए एक जत्था भागमल सौहटा, पंडित सीताराम व भास्करानंद शर्मा की अध्यक्षता में रवाना हुआ। भीड़ को बेकाबू होता देखकर राणा बौखला गया और उनके भीड़ को तितर–बितर करने के लिए आनन–फानन में फायर करने के आदेश दिये। जिससे वहां खलबली मच गई, बहुत से सत्याग्रही घायल हुए और दो व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। पहाड़ पर घटित होने वाली यह प्रथम खूनी घटना थी जिसने महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेताओं का ध्यान आकर्षित किया। बाद में इसकी तुलना जलियांवाला बाग नर संहार से भी की जाती है।

मूल शब्दः प्रजामंडल, जन जागारण, राष्ट्रवाद, बेगार, जनक्रांति, हिमालय रियासत, सत्याग्रही

प्रस्तावना
धामी रियासत षिमला पहाडी रियासतों में एक छोटी सी रियायत अथवा ठकुराई थी यह 31^0 7 व 31^0 3 उतरी आक्षांष तथा 77^0 3 व 77^0 11 पूर्वी देषांतर पर स्थित है। धामी रियासत षिमला से 25 किलो मीटर पष्चिम की ओर स्थित है। धामी रियासत के शासक चौहान वंष से संबंध रखते थे और अपने पृथ्वीराज चौहान के वंषज मानते थे धामी रियासत के पूर्वज दिल्ली से आए थे। आरंभ में धामी कहलूर रियासत की भी करद ठकुराई रही थी।[1] गोरखों ने भी धामी रियासत को अपने अधीन किया था। वे धामी से चार हजार रूपये कर वसूल करते थ। गोरखा युद्ध के पश्चात अंग्रेजी सरकार ने धामी ठकुराई 4 सितम्बर 1815 को एक सनद द्वारा राणा गोवर्धन सिंह को प्रदान की धामी रियासत पर यह शर्त लगा दी की आवष्यकता पड़ने पर सरकार को 40 बेगारी उपलब्ध करवाए। इसके बाद बेगारी उपलब्ध करवाने की शर्त के बदले 720 रू0 वार्षिक राज कर दिया गया।[2] धामी रियासत में प्रथम बार 1915 में भूमि बंदोबस्त राणा हिरा सिंह के समय किया गया क्योंकि राणा स्वयं एक कुषल प्रषासक था। इस कारण वष ब्रिटिष सरकार राणा से प्रसन्न होकर उसके प्रषासनिक गुणों के कारण अंग्रेजी सरकार द्वारा 1913 में सी0आई0ई0 की उपाधि से समान्नित किया गया। 1920 में राणा दिलीप सिंह धामी रियासत की गददी पर बैठा परन्तु राणा की अल्प आयु के कारण प्रषासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक प्रषासनिक काउंसिल का गठन किया गया 1930 में जाकर राणा दिलीप सिंह को रियासत के पूर्ण अधिकार दिए गए। राणा दिलीप सिंह द्वारा धामी रियासत में पूर्ण शराबबंदी की गई। धामी रियासत की प्रजा षिमला के नजदीक होने के कारण बहुत से विभागों मेंअपनी सेवाएं देते थे। दूसरे षिमला में हो रही राजनीतिक हलचल पर भी ध्यान रखते थे। धामी रियासत के लोग दूसरे रियासतों की अपेक्षा अधिक राजनीतिक रूप से जागरूक थे।[3]
शिमला पहाडी रियासतों में 1857 से लोगों में रियासतों व अंग्रेजी सरकार के प्रति दिन प्रतिदिन आक्रोष बढ़ता जा रहा था। क्योंकि 1857 के बाद भारत में बहुत से सामाजिक धार्मिक व राजीनीतिक संगठनें के द्वारा भारतीय लोगों में राष्ट्रवाद का संचार किया जा रहा था, जिसके परिणामस्वरूप पहाडी रियासतों की प्रजा में भी दिन प्रतिदिन रोष बढता जा रहा था। जिसका परिणाम 1857 के स्वाधीनता संग्राम में बुषहर के राजा शमषेर सिंह ने अंग्रजो से असहयोग की नीति अपनाई व कर देना तथा सामान्य रसद देना बंद कर दिया यह अवहेलना पहाड़ों में पहली ऐसी घटना थी जिससे अंग्रेजों को सोचने पर विवष कर दिया।[4]

1901 से 1947 तक पहाड़ी लोगों का शासकों के विरूद्ध संघर्ष
पहाड़ी रियासतों में जनता का रोष बढ़ता जा रहा था दूसरे लोगों में राष्ट्रवाद का प्रसार भी बढ़ता जा रहा था। जिसमें प्रमुख रूप से मण्डी में शोभा राम शासकों के अत्याचार के विरूद्ध लड़ा। यह अपने आप में एक अनूठी घटना थी जिसमें किसी व्यक्ति द्वारा प्रथम बार शासक के विरूद्ध विद्रोह किया गया।[5]

1914–15 में मण्डी षडयंत्र गदर पार्टी के सहयोग से हुआ जिसने मण्डी व सुकेत रियासतों में जन आन्दोलन शुरू किया जिसमें प्रमुख भुमिका मीना जवाहर सिंह, रानी खैर गढ़ी इत्यादि महानायकों द्वारा की गई। इन सभी जन आंदोलन के कारण षिमला पहाड़ी रियासतों ने भी प्रजामण्डल आंदोलन ने जोर पकडना शुरू कर दिया। प्रजामण्डल आंदोलन के समक्ष प्रमुख दो समस्या थी एक भारतीय रियासती राजाओं से लडना था दूसरे अंग्रेजी सरकार के साथ। यह दोनों कार्य अपने आप मुष्किल थे। क्योंकि ये दोनों लोगों का शोषण करते आ रहे थे जिस कारण वंष 1857 के बाद लोगों का आक्रोष दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। इसी के परिणाम स्वरूप 1939 में लुधियाना में ष्ऑल इंडिया स्टेट पीपल्स कांग्रेसष् का अधिवेषन हुआ जिसमें पहाड़ी राज्यों में प्रजामण्डल बनाने और इन क्षेत्रों में विषेष ध्यान देने का निर्णय लिया गया। इन कदमों के परिणाम स्वरूप प्रथम बार राजनीतिक जागृति आई। इसी दौरान पहाड़ी रियासतों में चम्बा, मण्डी, बिलासपुर, जुब्बल, सिरमौर तथा अन्य छोटी रियासतों मं प्रजा मण्डलों की स्थापना की गई।[6]

13 जुलाई 1939 को षिमला के पहाडी रियासतों राज्यों में प्रजा मण्डलों की एक सभा जुब्बल के नेता भागमल सोहटा की अध्यक्षता में की गई । जिसमें हिमालयी रियासती प्रजामण्डल का मुख्य उद्देष्य पहाड़ों की जनता में राष्ट्रवाद की जागृति पैदा करना था। दूसरे अपने अधिकारों के प्रति लोगों को अवगत करवाना तथा अंग्रेजी सरकार व पहाड़ी राजाओं के अत्याचार को कम करना था।

हिमालय रियासती प्रजामण्डल

दिसम्बर 1938 ई0 में षिमला में हिमालय रियासती प्रजामण्डल षिमला की स्थापना की गई इसका प्रमुख उद्देष्य विभिन्न टुकडों में बंटे प्रजामण्डलों का एकीकरण करना था। इस संगठन को संगठित करने का कार्य मुख्य रूप से टिहरी के सुमन देव बुषहर के पंडित पदमदेव, और जुब्बल के भागमल सोहटा का विषेष योगदान था। इसके उपरांत प्रजामण्डल में भज्जी के भस्करानंद, बाघल से हीरा सिंह पाल, ठियोग से सूरत राम प्रकाष, मधान से देवीदास मुसाफिर, क्योंथल से देवीराम केवला और बिलासपुर से सदाराम चंदेल शामिल हुए।[7] इसमें पंडित पदमदेव को प्रधान तथा भागमल सौहटा को महामंत्री बनाया गया। यह पहाड़ों में प्रथम तरह का एक केंद्रीय संगठन था। यह पहाडों में एकीकरण के लिए किया गया प्रथम प्रयास था। इसी दौरान पहाडों में अलग–अलग रियासतों में राजाओं के अत्याचार बढ़ते जा रहे थे। जिसमें मुख्य रूप से सिरमौर , बिलासपुर, मण्डी, चम्बा, कांगडा मुख्य रूप से वहां की जनता राजाओं के व व अंग्रेजी सरकार के अत्याचार से त्रस्त थी। इसी तरह से षिमला पहाड़ी रियासतों में से धामी रियासत भी अछुती नहीं थी वंहा पर भी राणा के अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे थे।

हिमाचल रियासती प्रजामण्डल षिमला थी इस अद्भूत सफलता से पहाड़ी यिासतों में दोहरी प्रतिकिया हुई। एक ओर अंग्रेजी सरकार रियासतों में प्रजामण्डलों की बढ़ती स्वीकृति और प्रभाव को देखकर घबरा रहे थे। किस तरह से जनता के आक्रोष को कम किया जाए। अंग्रेजी सरकार द्वारा आदेष दिया गया कि प्रत्येक रियासती षासक अपनी जनता पर अंकुष लगाए ताकि प्रजामण्डल आन्दोलन को कुचला जा सकें। दुसरी तरफ प्रजामण्डलों के नेता अति उत्साहित थे जिससे दिन प्रति दिन संगठन की शक्ति को नई ऊर्जा मिल रही थी। इस दौरान धामी प्रेंम प्रचारिणी सभा ने की हिमालय रियासती प्रजामण्डल में शामिल होने का निर्णय लिया। इस का मुख्य उद्देष्य यह था कि ताकि सरकार व राणा के विरूद्ध बढ़े संगठन का सहयोग मिल सके। 13 जुलाई 1939 को प्रेमप्रचारणी के सभी सदस्यों ने कसुम्पटी में कमाहली नामक स्थाान पर एक बैठक का आयोजन किया।इस बैठक की अध्यक्षता भागमल सौहटा द्वारा की गई। इस बैठक में प्रेम प्रचारणी धामी का नाम बदल कर धामी प्रजामण्डल किया गया और पड़ित सीता राम को इस प्रजामण्डल का अध्यक्ष बनाया गया। एक प्रस्ताव सर्वसहमती से पारित किया गया कि राणा धामी प्रजामण्डल को रियासत में मान्यता प्रदान करें। दुसरे बेगार प्रथा बंद कर दी जाएं। तीसरे भूमि लगान का आधा कर दिया जाएं। चौथे रियासत मे प्रतिनिधि सरकार की स्थापना हेतू उचित कार्यवाही करें इस प्रस्ताव में यह लिखा गया कि यदि राणा मांग पत्र पर जल्दी से उचित कार्यवाही न की और मांग पत्र पर उचित उत्तर न मिला तो 16 जुलाई 1939 को सात व्यक्तियों का एक षिष्ट मण्डल हलोग में राणा से मिलेगा। परन्तु राणा ने न ही उचित कार्यवाही की व न ही मांग पत्र का कोई उत्तर दिया।

16 जुलाई 1939 जन आक्रोष

धामी जन आक्रोष का षिमला पहाडी़ रियासतों में व भारतीय इतिहास में एक महत्वपुर्ण घटना मानी जाती है। इस जन आक्रोष की तुलना जलियांवाला बाग हत्या काड़ के साथ की जाती है। यह पहाडो़ मे घटने वाली पहली एक ऐसी घटना थी जिसने पहाडो़ की जनता को अपने अधिकारों के प्रति और ज्यादा सचेत करने में अपनी महत्वपुर्ण भूमिका अदा की। इस घटना की चर्चा राष्ट्रीय व अतंर्राष्ट्रीय स्तर पर की गई। 16 जुलाई 1939 को एक षिष्टमण्डल भागमल सौहटा के नेतृत्व में राणा से मिलने के लिए राजधानी हलोग गया। इस षिखर मण्डल में श्री भागमल सौहटा, हीरा सिंह पाल, मनसा राम, भास्कर नन्द शर्मा, पड़ित सीताराम, बाबुराम, देवी दास मुसाफिर, भगत राम और गौरी शंकर प्रमुख थे। जब यह षिष्टमण्डल घनाहट्टी पंहुँचा तो भागमल सौहटा को हिरासत में लिया तथा धामी झण्ड़े को जलाया गया जो कि राष्ट्रीय एकता का प्रतीत था। जलूस में भाग ले रहे सभी लोगों में जोष बढ़ता जा रहा था जोर से नारे लगाए जा रहे थे। महात्मा गाँधी की जिन्दाबाद, कांग्रेस जिन्दाबाद के नारे लगाते हुए जलूस आगे धामी की ओर चल पड़ा। रास्ते में आस–पास के गाँव के लोग जलुस में शामिल होते रहें और एक विषाल जन सभा में परिर्वतित होता गया हलोग पहुँचते समय इसके सदस्यों की संख्या लगभग 1500 लोग इसमें शामिल हो चुके गए। भागमल सौहटा, मनसा राम व धर्मदास को थाने गए। जैसे ही जलूस राजमहल की तरफ बढ़ता गया राणा के सैनिकों ने पत्थर बरसाने शुरू कर दिए व गोंलिया बरसानी शुरू कर दी व लाठी चार्च का आदेष दिया ताकि भीड़ को तीतर–बितर किया जा सकें। जिस कारणवंष निहत्थे लोगों के जलुस पर इस तरह गोलिया बरसाई गई जिससे गाँव मन्देआ के दुर्गादास और गाँव टगोष के उमादत्त घटना स्थल पर ही गोली लगाने से शहीद हो गए।[9] इसके अतिरिक्त लगभग 80–90 व्यक्ति घायल हुए जिसमें 40 को षिमला स्थित रिपन अस्पताल ले जाया गया। इनमें से 10 घालयों का दाखिल कर दिया और शेष को प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया। बाद में घायलों में से वषमाणा गाँव के रूपराम, कालवी के तुलसीराम और चैईयां के नारायण दास

आजीवन भर अपंग हो गए थे। इस आंतक का रूप देखकर रियासत की प्रजा डरकर 200 के लगभग धामी से पलायन कर गंज बाजार में शरणर्थीयों की तरह लगभग तीन महीनों तक जीवन व्यतीत किया। इस घटना के कारण पुरे षिमला रियासतों में एक डर का महौल पैदा हो गया। जिससे प्रजा में रोष की लहर दौड़ गई। इस सारे घटना क्रम के कारण अंग्रेजी सरकार द्वारा पुरी धामी रियासत में धारा 144 को लगा दी गई व षिमला शहर में भी क्फ्र्यू लगा दिया गया।[10]

"धामी गोली काण्ड" की जाँच के लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य लाला दुनी चंद अम्बालवी की अध्यक्षता में एक गैर सरकारी जांच समिति गठित की गई। इस समीति मे टिहरी के सुमन, षिमला कांग्रेस कमेटी के प्रधान श्यामलाल खन्ना कांग्रेस कार्यकर्ता लाला किषोरी लाल व सिरमौर के पड़ित राजेन्द्र दत्त शामिल थे। इस कमेटी ने षिमला के डिप्टी कमीष्नर से पुछताछ की। कमीष्नर ने बताया की राणा धामी ने 100 पुलिस जवानों की सहायता मांगी थी परन्तु इसके लिए इंकार कर दिया। राणा के भेजे आदमीयों को राणा क्योंथल के पास जुग्गा भेजा था। जब उनसे कहा मेरे पास अपनी प्रजा को मारने के लिए आदमी नही है। यदि मेरी प्रजा इस तरह मेरे पास आए तो मैं उनसे कहुंगा कि मैं तो एक कम्बल–वह भी यदि आप लोग कहें तो– लेकर चला जाऊंगा बाकि काम आपका है। राणा हेमेन्द्र सेन ने उसी दिन अपनी रियासत में बेगार प्रथा सदा के लिए बंद कर दी।[11]

धामी गोली काड़ के बाद षिमला पहाड़ी रियासतों में चल रहे राजाओं की हत्यायारों को अब उजागर किया जाने लगा। धामी गोली काड़ पहाड़ो में घटने वाली एक ऐसी घटना थी इसने पुरे पहाड़ी क्षेत्रो में आम जनमानस में राष्ट्रवाद को उजागर करने के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इस घटना को गंभीरता से लेते हुए धामी प्रजामण्डल के प्रधान पंडित सीता राम, जुब्बल के भागमल सौहटा के भाई काहन सिंह सौहटा और भज्जी रियासत प्रजामण्डल के नेता भास्करानंद, राजकुमारी अमृत कौर के नेतृत्व में 26 जुलाई 1939 को महात्मा गांधी से मिलने दिल्ली गए। गांधी जी ने पहाड़ी नेताओं से इस घटना की पुरी जानकारी ली और उन्हे नेहरू जी से मिलने को कहा। पंडित सीताराम द्वारा इस पूरी घटना का ब्यौरा पंडित जवाहर लाल नेहरू को दिया गया। नेहरू द्वारा इस घटना की जांच करने के लिए अपने नीजि सचिव शांति स्वरूप धवन को षिमला भेजा गया। धामी घटना में घायलों हुए लोगों की देख–रेख का पूरा जिम्मा प्रजामण्डल के सदस्य व कांग्रेस के लोगों को दिया गया। धामी गोली काण्ड की घटना की रिपोर्ट जांच समिति द्वारा 35 पृष्ठों की रिपोर्ट 30 जुलाई 1939 में नेहरू जी को भेजी गई। इसमें रियासती राजाओं व अंग्रेजी सरकार का घोर विरोध किया गया व न्यायिक जांच की बात की गई। धवन के साथ जाते पंडित सीताराम को बंदी बनाया गया और उनकी प्रजामण्डल के अत्याचार के उपर उनकी पुस्तक चेतावनी को भी जब्त किया गया इस जन आंदोलन का प्रभाव पूरी धामी रियासत के गांव गावं तक पड़ा प्रत्येक गांवों में रियासती राजा के खिलाफ लोगों द्वारा जूलूस निकाले गए और इसके लिए षिमला के आर्य समाज नेताओं ने भी लोगों का सहयोग किया। इस घटना का विरोध पूरे भारत वर्ष के अलग–अलग अखबार में किया गया इसका प्रचार पूरे राष्ट्र में किया गया जिससे लोगों में राष्ट्रवाद की भावना का प्रचार हुआ। इस घटना का प्रभाव रियासत में लगभग दो महीने तक मिलता रहा।[12]

धामी रियासत के राजा दलीप सिंह ने अपनी सहायता के लिए ब्रिटिष सरकार से सैनिक सहायता मांगी जिसके लिए धामी के लिए पंजाब से सेना की टुकड़ी भेजी गई। इस सेना के सैनिक ने लोगों में आतंक का माहौल पैदा कर दिया मजबूरन लोगों को अपनी जान बचाने के लिए भज्जी, बाघल, कोटी व क्योंथल रियासतों में शरण ली। इसका सारा रूपयों का बोझ रियासत की जनता के उपर लगाया गया। इस घटना की जांच रिपोर्ट अक्तुबर 1939 में वायसराय को सौंपी गई। परन्तु अंग्रेजी सरकार ने इसके विपरीत राणा दलीप सिंह को राजा की उपाधि दी गई। धामी रियासत प्रजामण्डल ने पूरे हिमाचल में राष्ट्रवाद को जगाने के लिए एक संजीवनी के रूप में कार्य किया।[13]

निष्कर्ष

हिमालयी रियासती प्रजामण्डल में धामी गोली कांड की घटना पहाड़ों में घटने वाली पहली ऐसी घटना थी जिसने पूरे भारतवर्ष में राष्ट्रवाद का संचार किया। जिस समय रियासती राजाओं के अत्याचार व ब्रिटिष सरकार के अत्याचारों से त्रस्त जनता ने विरोध करने के लिए पहाडों में प्रजामण्डलों का गठन किया। जिसके परिणाप स्वरूप सर्वप्रथम धामी प्रेम प्रचारणी का गठन किया गया। इस सभा के गठन का उददेष्य प्रजा के उपर रियासती राजाओं के अत्याचारों का विरोध करना था जिसमें मुख्य रूप से बेगार प्रथा की समाप्ति, भूमि लगान में पचास प्रतिषत कमी करना था, धामी प्रजामण्डल को मान्यता देना था, नागरिकों के लिए अधिकारों की स्वतंत्रता देना था, रियासतों की जनता पर लगाए गए प्रतिबंधों को खत्म करना था प्रचारणी सभा के सदस्यों को जो संपति जब्त की गई है उसे वापस करना था और धामी रियासत के एक प्रतिनिधि सरकार की स्थापना करना था जिसमें जनता के प्रतिनिधि को शामिल किया जाए बाघल रियासत के राजा द्वारा लोगों की इन सभी मांगों को अनसुनी कर दी जिस कारण वंष लोगों का रोष बढ़ता गया। इसी रोष के कारण धामी गोली काण्ड की घटना घटी। परन्तु इस घटना ने पूरे भारतवर्ष में राष्ट्रवाद की भावना का संचार किया। यहां तक कि यह घटना पूरे भारतवर्ष के लोगों का ध्यान पहाड़ी रियासतों की तरफ खिंचने का प्रयास इस घटना से किया गया। यह पहली ऐसी जनक्रांति थी जिसमें आम जनता ने अपनी जन सहभागिता की। पहाड़ी रियासतों मे आम जनता पर पहली बार इस तरह की गोलियां आम जनता पर चलाई गई जिसमें आम जनता शहीद हुई। सबसे अधिक अत्याचार भी इस रियासत में वहां की जनता पर ब्रिटिष सरकार व राजाओं के द्वारा किया गया।

संदर्भ सूची

1. Gazetter of the Shimla Hill Staes 1910, B.R. Publishing Corporation Delhi, Reprint 2012: Chapter 13, Page 3,4.
2. पामेला कंवर, इपंरियल शिमलाः राजा पॉलिटिकल कल्चर ऑफ दार राज, आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, दिल्ली 2003, पुनमुद्रित पृष्ठ संख्या 170
3. हरवंश गर्ग (संपादित), हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास, भाषा व संस्कृतिक विभाग, हिमाचल प्रदेश शिमला, 1999. (द्वितीय संस्करण), पृष्ठ 86.
4. जगमोहन बलोखरा, आलौकिक हिमाचल प्रदेश, एम.जी. प्रकाशक नई दिल्ली पुनमृद्रित 2020, पृष्ठ संख्या 891, 892.

5. वही पृष्ठ संख्या 891, 892.
6. डॉ. देवेन्द्र गुप्ता, हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास, 2013 पृष्ठ 28.
7. रुपशर्मा, हिमाचल प्रदेशः अंधकार से प्रकाश कीओर 2006, पृष्ठ 649.
8. मीया गोवर्धन सिंह, प्रो. चमन लाल गुप्त, हिमाचल प्रदेश इतिहास, संस्कृति और आर्थिक परिवेश, मिर्नवा पब्लिशर्स एड़ डिस्ट्रीब्यूर्टस शिमला, द्वितीय संस्करणः 2014, पृष्ठ 169, 170.
9. वही पृष्ठ 169, 170.
10. J. Hutchison and J.Ph. Vogel, History of the Punjab Hill States, Vol. II, 1933, Lahore, Rpt. 2000. Language and Culture Deptt. H.P. -411
11. Harwansh Garg, Himachal Pradesh mein swatantrat Sangram Ka Sankshipt Itihas 1996, Shimla, P. 178.
12. डॉ. राजेन्द्र अजी, हिमाचल प्रदेश एक बहुयामी परिचय, सरला प्रकाशन शिमला, नवरनतम संस्करण 2019 पृष्ठ 747.
13. डॉ. चेतराम गर्ग, निकूराम, शिमला क्षेत्र की पहाड़ी रियासतों में 1857 की क्रान्ति और उसकी पृष्ठभूमि, इतिहास दिवाकर, जुलाई 2021 पृष्ठ 13, 14.